घटदान विधि

- ✡ मृतक के लिए सालभर प्रतिमाह अमावस को पीपल वृक्ष के समीप घड़ा तथा सीधा दिया जाता है।
- ✡ यदि प्रतिमाह घटदान नहीं किया गया –तो श्राद्ध आरम्भ करने के पूर्व १२ घड़ा तथा १२ सीधा बारह मास के निमित्त देना चाहिए।

विधि

- ✡ पीपल वृक्ष के समीप दक्षिणमुख बैठकर –अपने ऊपर जल छिड़के –

ओम् अपवित्रः पवित्रो व सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

- ✡ ३ बार आचमन करे –

ओम् केशवाय नमः। माधवाय नमः। नारायणाय नमः।

- ✡ हाथ धो ले–

हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

- ✡ दोनों हाथों की तीसरी अंगुली में पैंती पहन ले –

ओम पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

- ✡ पूर्व की ओर मुख करके ३ बार गायत्री का जप करे –

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

- ✡ दक्षिण की ओर मुख करके अपसव्य होकर मृतक का ध्यान करें –

आयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देव यानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।।

- ✡ मोटक-तिल जल लेकर जल भरा घट छू ले –संकल्प करें –

अद्य विशेषण विशिष्टयां शुभ पुण्य तिथौ .... गोत्रः ..... नामाऽहम् अस्मद् पितुः .....नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) यमराज-धर्मराज वैतरणी

संकट निवारण पूर्वक-अक्षय स्वर्गादि-उत्तम लोक गमन कामनया तृष्णा निवारणार्थम्-अमुक-मासिक इमं तिल-जल सहितं घटं यथानाम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ फिर मोटक-तिल-जल-द्रव्य लेकर सांगता का संकल्प करें –

।। अद्य कृतैतत् घटदान सांगता सिद्ध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ मोटक-तिल-जल लेकर सीधा का संकल्प करें –

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ .... गोत्रः ..... नामाऽहम् अस्मद् पितुः .... नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) यमराज-धर्मराज संकट

टिप्पणी –१२ माह का एक साथ देने का संकल्प पढ़ें –अद्य शुभ पुण्यतिथौ ..... गोत्रः .... नामाऽहं पितुः ..... गोत्रस्य ... नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) यमराज धर्मराज वैतरणी संकट निवारण पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक प्राप्ति कामनया तृष्णा निवारणार्थम् –प्रथम मासिक –द्वितीय मासिक –तृतीय मासिक –चतुर्थ मासिक –पंचम मासिक –षष्ठ मासिक –सप्तम मासिक–अष्टम मासिक –नवम मासिक –दशम मासिक –एकादश मासिक तथा च द्वादश मासिक निमित्तकान् इमान् घटान् जल-तिल सहितान् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

निवारण पूर्वक-स्वर्गादि-उत्तमलोक प्राप्ति कामनया क्षुधा निवारणार्थम् अमुक मासिक इमम्-आमान्नं सदक्षिणाकं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ मोटक-तिल-जल-द्रव्य –लेकर सांगता का संकल्प पढ़ें –

अद्य कृतैतत् आमात्र दान प्रतिष्ठा संसिद्ध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ घट का जल पीपल पर चढ़ा दे, मन्त्र पढ़ें –

नमोऽश्वत्थ महावृक्ष गोविन्दस्य सदा प्रिय।
तवाधः स्थापितः कुम्भः सजलो यो हि दृश्यते।।

● १२ माह का एक साथ देने पर संकल्प करें –

अद्य शुभ पुण्य तिथौ .... गोत्रः .... नामाऽहम् पितुः गोत्रस्य ..... नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) यमराज धर्मराज संकट निवारण पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया क्षुधा निवारणार्थम् प्रथम मासिक, द्वितीय मासिक, तृतीय मासिक, चतुर्थ मासिक, पंचम मासिक, षष्ठ मासिक, सप्तम मासिक, अष्टम मासिक, नवम मासिक, दशम मासिक, एकादश मासिक, द्वादश मासिक निमित्तकं इमम् –आमान्नम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्म विष्णु शिवात्मकः।
अस्यप्रदानात् तृप्यन्तु यममार्गे पितरश्च मे।।
गन्धोदक तिलैर्मिश्रं सात्रं कुम्भं समविन्तम्।
पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि ह्यक्षय्य मुपतिष्ठताम्।।

✡ पीपल वृक्ष की ३ बार परिक्रमा करें –

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे-पदे।।

✡ हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

उदीरिता मवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं य ई यु रवृका ऋत ज्ञास्ते ऽ नो वन्तु पितरो हवेषु।। अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः। तेषां वयं ँ सुमतौ यज्ञियाना मपि भद्रे सौमनसे स्याम।। येन पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽ नू हिरे सोमपीथं वशिष्ठाः। तेभिर्यमः स ँ राराणो हवी ँ ष्यु शन्तु शद्भिः प्रतिकाम मत्तु।।

✡ स्नान होकर अपना नाक-कान छूकर पूर्वोक्त भगवान का ध्यान करें –

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः परिपूर्णमस्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर।।

✡ हाथ-पाँव धोकर घर आवें।

वार्षिक श्राद्ध विधि

✡ श्राद्ध के दिन घर के आँगन में श्राद्ध करने के निमित्त स्थान को गोबर से लीप कर, पीली सरसों तथा तिल छिड़क कर पवित्र कर लें।

✡ गोबर के कंडा की अग्नि तैयार कर मिट्टी की नयी-शुद्ध हाँडी में पिण्ड के लिए खीर पकाए।

१. स्वयं पकाएँ, अथवा श्राद्धकर्त्ता की पत्नी भी खीर पका सकती है।

२. लोहे के पात्र में खीर नहीं पकाना चाहिये और लोहे की कलछुल आदि से भी चलाना नहीं चाहिए।

३. खीर चलाने के लिए सरकंडा या अन्य कोई पवित्र लकड़ी का उपयोग करना चाहिये।

४. हाँडी में चावल-दूध-घी-शहद –सभी वस्तुएँ एक बार ही छोड़कर पकने के लिए अग्नि पर रख दें। बार-बार देखना-चलाना नहीं चाहिए। चीनी बाद में छोड़े अन्यथा चावल नहीं पकेगा। तिल पिण्ड बनाते समय मिलाना चाहिये।

✡ खीर पक जाने पर पहले यदि प्रतिमाह घटदान नहीं किया है, तो उसे करें। उसके बाद –

✡ एक तिल या सरसों के तेल का दिया जला कर दक्षिण दिशा में संभाल कर रख दें।

✡ श्राद्ध पूर्ण होने तक दीपक बुझने नहीं पावे –पूरी व्यवस्था कर दें।

✡ दीपक में १ ही बाती लगाये –दीपक का मुख दक्षिण दिशा में रहे।

✡ अपने सामने स्वच्छ-शुद्ध मिट्टी लेकर १-१ बीता लम्बी चौड़ी १६ वेदी पिण्डदान के लिए बनावे।

✡ मलमास हो तो १७ वेदी बनाएं।

✡ वेदी दक्षिण दिशा की ओर नीचे रहे, जिससे जल गिरने पर दक्षिण दिशा की ओर ही बहे।

✡ वेदी पर कोई तिनका-कीड़ा-मकोड़ा आदि न रहे –सावधानी से देख लें।

✡ १६ वेदी के आगे (दक्षिण की ओर) तीन पत्तों को जोडकर बनाए हुए १६ तिप्ता (चट) अलग-अलग आसन के लिए रखें। मलमास में १७ तिप्ता रखें।

✡ सोलहों आसन (तिप्ता) के सामने वेदी की ओर तिप्ता से मिला कर १-१ पत्ता भोजन पात्र के लिए रख दें।

✡ भोजन पात्र पर १-१ दोनिया अर्धपात्र के लिए रख दें।

✡ ३ कुशा को एक में मिलाकर गाँठ लगा ले। इसी त्रिकुश से पूजन होता है।

✡ २ कुशा को बट कर बीच से मोड़ कर मूल भाग (जड़) तथा अग्रभाग को मिलाकर गाँठ लगा लें –इसे मोटक कहते हैं –इसी से पिण्डदान आदि होता है।

✡ २ कुशा के बीच वाले हिस्से को निकाल कर दोनों को बट कर गाँठ लगाकर दाहिने हाथ में पहनने के लिए १ पवित्री (पैंती) बना लें।

✡ इसी तरह ३ कुसा की १ पवित्री बाएँ हाथ के लिए तैयार कर लें।

✡ पवित्री (पैंती) दोनों हाथों में अनामिका (तीसरी) अँगुली में पहनी जाती है।

✡ १-१ कुशा को बट कर मूल-अग्रभाग मिला कर गाँठ लगाकर १६ मोटक-आसन के लिए तैयार कर लें। मलमास हो तो १७ मोटक बनाना चाहिए।

श्राद्ध प्रारम्भ

✡ पूर्व की ओर मुख करके त्रिकुश से अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर जल छिड़के –

ओम अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

✡ ३ बार आचमन करें।

ओम् नारायणाय नमः। ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः।

✡ हाथ धो लें –

हृषीकेशाय नमः। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

✡ पवित्री (पैंती पहन ले)

✡ दीपक पर अक्षत-फूल छोड़कर प्रार्थना करें –

हे दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

✡ बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से उसे ढँक कर निम्न मन्त्र पढ़ें –

ओम् नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम।
इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः।।

✡ दाहिने हाथ से २-२ दाना सरसों चारों दिशा में छिड़के –मंत्र पढ़ें –

पूर्व में – प्राच्यै नमः। दक्षिण में – अवाच्यै नमः।
पश्चिम में – प्रतीच्यै नमः। उत्तर में – उदीच्यै नमः।
ऊपर आकाश में – अन्तरिक्षाय नमः। नीचे भूमि में– भूम्यै नमः।

✡ हाथ की सरसों अपने सामने भूमि पर छोड़ दें।

✡ अपने सामने भूमि पर जल-चंदन-पुष्प-चढ़ाकर पूजन कर दें। पूजन वाक्य पढ़ते रहें –

।।श्राद्धभूम्यै नमः।। –इसी से चन्दन-फूल चढ़ाएं।

✡ १ कुशा को ३ बार मोडकर २ दाना तिल लेकर अपनी दाहिनी टेट में (धोती में) लपेट लें – निम्न मंत्र पढ़ें –

।। सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्यो –
निरसि सुस्याः कृषि स्कृधि।।

✡ त्रिकुशा-तिल-जल लेकर संकल्प करें –

अद्य शुभपुण्यतिथौ ... गोत्रः .... नामाऽहम्-अस्मद् पितुः ..... गोत्रस्य ..... नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत (१) पाक्षिक (२) प्रथम मासिक (३) द्वितीय मासिक (४) त्रैपाक्षिक (५) तृतीय मासिक (६) चतुर्थ मासिक (७) पंचम मासिक (८) षाण्मासिक (९) ऊनषाण्मासिक (१०) सप्तम मासिक (११) अष्टम मासिक (१२) नवम मासिक (१३) दशम मासिक (१४) एकादश मासिक (१५) द्वादश मासिक (१६) ऊनाब्दिक संज्ञकानि श्राद्धानि एकोद्दिष्ट विधिना करिष्ये।

✡ कुल-तिल-जल-भूमि पर छोड़ दें।

✡ ३ बार गायत्री का जप करें –ब्राह्मण मन्त्र पढ़ें –

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।

✡ जनेऊ-अंगौछा उलटा पहन ले –अपसव्य हो जाय। दक्षिण दिशा में मुख करके बैठे।

✡ दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल तथा १६ मोटक आसन के लिए लेकर संकल्प करें –

प्रतिज्ञा संकल्प में –मलमास होने पर (१४) एकादशमासिक के बाद (१५) अधिकमासिक (१६) द्वादशमासिक-(१७) ऊनाब्दिक संज्ञकानि पढ़ना चाहिए।

मासिक श्राद्ध में –वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अमुक मासिक श्राद्ध मेकोदिष्ट विधिना करिष्ये।

अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) एषु श्राद्धेषु इमानि आसनानि ते स्वधा।

- ✡ संकल्प करके आसन को १६ मोटक सामने के १६ तिम्रा पर दक्षिणाभिमुख क्रमशः १-१ रख दें।
- ✡ हाथ में लगा तिल-जल इन्हीं आसनों पर छिड़क दें।
- ✡ संकल्प वाला मोटक अपने आगे भूमि पर रख दें।
- ✡ सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले फिर अपसव्य हो जाय –
- ✡ दाहिने हाथ में तिल लेकर सभी सोलह भोजन पात्रों पर तिल छिड़क दे –मन्त्र पढ़ें –

अपहताअसुरा रक्षा ँ सिवे दिषदः।

- ✡ हाथ में तिल लेकर मृतक का आवाहन करें –निम्न मन्त्र पढ़ें –

आयन्तुनः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभि र्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्व स्मान्।।

१. इस श्राद्ध में आसन-दान, पिण्डदान-पूजन आदि सभी कार्य पश्चिम से प्रारम्भ कर पूर्व में समाप्त करना चाहिए।
२. मासिक श्राद्ध में एक ही आसन मोटक रखा जाता है। अतः जहाँ १६ लिखा है, मासिक श्राद्ध में एक ही मोटक समझना चाहिए। निम्नलिखित संकल्प पढ़ें –आसनदान में –अद्य अस्मद् पितुः (मातुः) अस्मिन् श्राद्धे इदमासनं ते स्वधा –पढ़ना चाहिए।

- ✡ तिल पितृ आसन (१६ मोटक) पर छिड़क दें।
- ✡ कुशा का मूल भाग निकाल कर १-१ कुशा में गाँठ लगाकर कुशा का अग्रभाग दक्षिण की ओर रहे –इस ढङ्ग से १६ आसन के सामने रखी १६ दोनिया (अर्घपात्र) में रख दें, रखते समय मन्त्र पढ़ें –

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

- ✡ सोलहों अर्घपात्र (दोनिया) में थोड़ा-थोड़ा जल भर दे, मन्त्र पढ़ते रहें –

ओम् शन्नोदेवी रभिष्टयआपो भवन्तु पीतये। शँय्यो रभि स्त्रवन्तु नः।

- ✡ सभी दोनियो (अर्घपात्र) में २-२ दाना तिल छोड़ दे, मन्त्र पढ़े –

ओम् तिलोऽसि सोम दैवत्यो गोसवो देव निर्मितः।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।।

- ✡ चुपचाप सभी १६ अर्घपात्र में चंदन-फूल छोड़ दें।
- ✡ सभी १६ अर्घपात्र (दोनिया) से कुशा निकाल-निकाल कर दोनिया के सामने वाले भोजन पात्र (पत्ता) पर उत्तर की ओर अग्रभाग करके रख दें।

✡ जिस दोनिया का कुश हो उसी के आसन पर रखना चाहिए, ध्यान से रखें।

✡ संकल्प वाला मोटक लेकर पूजा के लोटा से बोर-बोर कर इन सभी १६ कुशों पर जल छिड़क दें।

✡ दाहिने हाथ से इन १६ अर्घपात्रों (दोनिया) को ढँक लें – मन्त्र पढ़ें –

ओम् या दिव्या आपः पयसा सं वभूवुर्या अन्त रिक्षा उत पार्थि वीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाश ँ स्योना सुहवा भवन्तु।।

✡ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें –

अद्य वार्षिक श्राद्धे अस्मद् पितः अमुक गोत्र! अमुकनाम! (मातः गोत्रे देवि) एषु श्राद्धेषु एते हस्तार्घाः ते स्वधा।

✡ संकल्प करके हाथ का तिल-जल दोनिया पर छिड़क दें। मोटक सामने भूमि पर रख दें।

✡ क्रमशः १-१ अर्घपात्र उठाकर १-१ बूँद जल भोजन पात्र पर रखे कुशा पर शेष जल आसन मोटक पर चढ़ा दें।

✡ फिर भोजन पात्र पर रखे कुशा को उठाकर दोनिया (अर्घपात्र) में रख दे।

(१) मासिक श्राद्ध में –अद्य अस्मद् पितः (मातः) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत ..... अमुक मासिक श्राद्धे एष हस्तार्घः ते स्वधा।

✡ दोनिया आसन के पीछे (दक्षिण में) उलट कर रख दें।

✡ इसी तरह सभी अर्घपात्र का जल चढ़ाए, कुशा रखे, अर्घपात्र पीछे उलट कर रखता जाए – मन्त्र पढ़ता जाए –

।। पित्रे स्थान मसि।।

✡ श्राद्ध के अन्त तक इन उलट कर रखी दोनिया को हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

✡ सभी १६ आसन मोटक पर २-२ दाना तिल छिड़क दें।

✡ बाएँ हाथ से १ कुशा लेकर पिता (माता) का ध्यान करें –

।। इमं लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम्।
मनसा वायुरूपेण विप्रे त्वां योजयाम्यहम्।।

✡ पढ़कर कुशा दक्षिण दिशा में फेंक दे।

✡ सभी १६ आसन मोटक पर चुपचाप मन में पिता (माता) का ध्यान करता हुआ चंदन-तिल-फूल-कच्चा सूत-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दें।

✡ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें –

अद्य अस्मद् पितः अमुक गोत्र! नाम (मातः गोत्रे देवि) एषु श्राद्धेषु एतानि-गन्ध पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि ते स्वाधा।

✡ संकल्प के बाद जल-तिल आसन पर छिड़क दें। दाहिने हाथ में जल लेकर आसन (भोजन पात्र) के चारों ओर घुमा कर भूमि पर छोड़ दें।

।। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।
एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

✡ १ दोनिया में थोड़ा-सा जल छोड़कर अग्नि कोण में (पितृ आसन के बाएँ) एक किनारे पर रख दें।

✡ १ चम्मच पिण्डा वाली खीर हाथ में लेकर तिल-घी लगा कर इस दोनिया में चोड़ दें —मन्त्र पढ़ें—

।। इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः।।

✡ सभी १६ भोजन पात्रों पर १-१ दोनिया रख कर —थोड़ा-थोड़ा जल भर दें।

✡ सभी १६ भोजन पात्रों पर १-१ बूँद घी तथा आधा-आधा चम्मच खीर रख दें।

✡ दोनों हाथ के अँगूठों से शहद छूकर, हाथ को उलटा कर (हथेली नीचे रहे)। सभी १६ भोजन पात्रों पर रखे घी-खीर-जल को ढ़ँक ले या भोजन पात्रों को छू लें —मन्त्र पढ़ें—

मासिक श्राद्ध में (१) अद्य अस्मद् पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत .... अमुक मासिक श्राद्धे एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-वासंसि ते स्वधा।

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रजः मधुद्यौ रस्तु नः पिता।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु माँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
मधु-मधु-मधु।

✡ बाएँ हाथ से भोजन पात्रों को छूते हुए —निम्न मन्त्र पढ़ें —

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।
(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।
(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम्।।

✡ बाएँ उल्टे हाथ से १-१ भोजन पात्र को छू कर दाहिने हाथ से भोजन पात्र पर घी-खीर, दोनिया का जल ३-३ बार क्रमशः १-१ मोटक आसन पर छुआ दें।

✡ जिस पात्र का हो, उसी मोटक पर लगाए —एक-दूसरे का उलट-फेर न हो। निम्न वाक्य पढ़ते रहें —

खीर — इदमन्नम्। इमन्नम्। इदमन्नम्।

घी – इदमाज्यम्। इजमाज्यम्। इदमाज्यम्।

जल – इमा आपः। इमा आपः। इमा आपः।

फिर खीर – इदं कव्यम्। इदं कव्यम्। इदं कव्यम्।

✡ सभी १६ भोजन पात्रों पर तिल छिड़क दें –निम्न मन्त्र पढ़ें –

।। अपहताअसुरा रक्षा ꣳ सिवेदिषदः।।

✡ मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करें –

।। अद्य अस्मद् पितः अमुकगोत्र! अमुकनाम! (मातः गोत्रे! देवि!) एषु श्राद्धेषु इमानि सोपकरणानि दत्तैतानि ते स्वधा।

✡ हाथ का तिल-जल आसन पर छिड़क दें –

✡ सव्य होकर –अपना नाक-कान छू लें, गायत्री जप करें – मंत्र पढे

१. मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्न सन्त्वोषधीः।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव ꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता।

मासिक श्राद्ध में (१) – अद्य अस्मद् पितः ...... गोत्र ..... नाम (मात्रः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत ..... अमुक मासिक श्राद्धे इमानि सोपकरणानि दत्तैतानि ते स्वधा।

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

।। ओम् मधु-मधु-मधु।।

२. ।। ओम ! अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेद् तत्सर्व मच्छिद्र मस्तु।।

✡ अपने पैर के नीचे ३ कुशा रख कर निम्न मन्त्रों का पाठ करें –

१. कृणुष्वपाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजे वा म वाँ इभेन।
तृष्वीमनु प्रसितिम् द्रूणा नोऽस्ताऽसि विदध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।।

२. तव भ्रमास आशु या पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः।
तपू ꣳ ष्यग्ने जुह्वा पदङ्गा न सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः।।

३. प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरे अद्य श ꣳ सो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत्।

४. उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्या मित्राँ ओषता त्तिग्म हेते।
यो नो अराति ꣳ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।

५. ऊर्ध्वोभव : प्रति विध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्या न्यग्ने।
अवस्थिरा तनु हि यातु जूनां जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून्।।

✡ पितृ भोजन पात्र पर २ दाना तिल छिड़क कर फिर मन्त्र पाठ करें –

उदीरता मवर उत्परा स उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असु य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु।।

पुरुख सूक्त पाठ

सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सैहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि ひ सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम्।
पुरुष एवेद ひ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उता मृतत्व स्येशानो यदन्ने नाति रोहेति।
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि।

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यत्क्रामत् साशना नशने अभि।
ततो विराड जायत विराजो अधिपूरुषः।
सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ひ सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तमादजायत।
तस्मा दश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माजाता अजावयः।
तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषंजात मग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखङ्किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ँ शूद्रो अजायत।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।
नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत।
पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ अकल्पयन्।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।
वसन्तोऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।
सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन् तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम्।
यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
आशुः शिशानो वृषभो नभी मो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ँ सेना अजयत्साकमिन्द्रः।
नमः शम्भवाय च मवो भवाय च नमः।
शङ्कराय च मयस्कराय च नमः। शिवाय च शिततराय च।।
नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे। नमः पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः।।

✡ अपसव्य होकर विकरपिण्ड दें।

✡ अग्नि कोण में १ किनारे (जिससे कुछ छू न जाय) ३ कुशा का टुकड़ा दक्षिण की ओर अग्रभाग करके विकर-आसन के निमित्त रख दें।

✡ १ दोनिया में १ पिण्डा-तिल-घी-शहद लगा कर ले, जल ले लें।

✡ ऊपर १ कुशा रख कर दाहिने हाथ से ढँक ले –मन्त्र पढ़ें –

।। अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्।।

- ✡ अपने आसन से उठकर अग्नि कोण में जो ३ कुशा-आसन रखा है, उसी पर पिण्डा सहित दोनिया उलट कर रख दें।
- ✡ दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दें।
- ✡ बाहर निकल कर हाथ-पाँव धोकर अपने स्थान पर फिर बैठें।
- ✡ पूर्व-मुख होकर सव्य होकर अपने ऊपर जल छिड़के।

।। अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मेरत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

- ✡ ३ बार आचमन करें –

।। नारायणाय नमः।। केशवाय नमः।। माधवाय नमः।।

- ✡ हाथ धो लें। दोनों हाथ में दूसरी पवित्री (पैंती) पहन लें।
- ✡ हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करें –

अनादि निधनो देवः शंक चक्र गदाधरः।
अव्यक्तः पुण्डरीकाक्षः सर्व पाप हरो भव।।

- ✡ जनेऊ-अंगोछा उलटा कर अपसव्य हो जाय, दक्षिण की ओर मुख कर लें।

- ✡ बाएँ हाथ में क्रमशः एक-एक कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से क्रमशः सभी १६ वेदी पर एक-एक करके रेखा (लाइन) खींच दें –मन्त्र पढ़ें –

।। अपहता असुरा रक्षा ँ सिवे द्विषदः।

- ✡ लाइन खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर में फेंकता जाए।
- ✡ गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर सभी वेदी पर घुमा दे –मन्त्र पढ़ते रहें –

ये रूपाणि प्रतिमुञ्च माना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात्।

- ✡ घुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दें।
- ✡ मोटक से सभी वेदी पर जल छिड़क दें –मन्त्र पढ़ते रहें –

।। अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।

- ✡ कुशा को बीच से अलग कर ३-३ कुश टुकड़ों को सभी वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दें।
- ✡ दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहें।

टिप्पणी –एक ही कुशा से १६ वेदी पर रेखा नहीं करें, हर वेदी के लिए अलग-अलग कुशा लें।

✡ सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें –हरि स्मरण करें।

✡ पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें –

।। देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः।।

✡ अपसव्य होकर –दक्षिण मुख कर लें।

✡ हर वेदी के आगे (अपनी ओर) एक-एक दोनिया रख दें।

✡ दोनिया में थोड़ा-थोड़ा जल भर दें, तिल-चंदन-फूल छोड़ दें।

✡ मोटक तिल-जल लेकर –बाएँ हाथ से सब दोनिया को छूल लें। संकल्प पढ़ें –

।। अद्य अस्मद् पितः-अमुक गोत्र! नाम! (मातः गोत्रे-देवि) एषु श्राद्धेषु
पिण्ड स्थानेषु अत्र अवने निङ्ध्वं ते स्वधा।।

✡ हाथ का तिल-जल-दोनिया पर छिड़क दे, मोटक रख दें।

✡ एक-एक दोनिया क्रमशः उठा-उठा कर २-२ बूँद जल वेदी पर पिछे कुशा पर चढ़ा दें।

✡ शेष जल सहित दोनिया अपने स्थान पर रखता जाए।

मासिक श्राद्ध में – अद्य अस्मद् पितः ...... गोत्र ..... नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अमुक मासिक श्राद्धे पिण्डस्थाने अत्र अवनेनिक्ष्व ते स्वधा।।

।। पिण्डदान करे।।

✡ खीर में तिल-घी-शहद मिला कर बेल के समान १६ पिण्डा बना लें। थोड़ी खीर बचाए रहें।

✡ सभी पिण्डों पर १-१ बूँद शहद लगा दें, हाथ में मोटक ले लें। बायां पैर मोड़ लें।

✡ क्रमशः १-१ पिण्डा-तिल-जल लेता जाय और संकल्प पढ़-पढ़ कर वेदी पर कुशा के ऊपर रखता जाय।

(१) अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत पाक्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(२) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत प्रथम मासिक एष पिण्डस्ते स्वधा।

(३) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत द्वितीय मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(४) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत त्रैपाक्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(५) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत तृतीय मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(६) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत चतुर्थ मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(७) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत पंचम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(८) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत षाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(९) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत ऊन्षाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(१०) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत सप्तम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(११) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अष्टम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

टिप्पणी – १. पिण्डदान-पितृतीर्थ [दाहिने हाथ के अँगूठा तथा तर्जनी (पहली अंगुली) के बीच से दिया जाता है। दक्षिणाग्र देना चाहिए।

२. मासिक श्राद्ध में –एक ही पिण्डा बनाए। जिस माह का वह संकल्प पढ़ें।

(१२) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत नवम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(१३) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत दशम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(१४) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत एकादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(१५) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत द्वादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

(१६) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत उन्वार्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

✡ हाथ का मोटक भूमि पर रख दें, हाथ का तिल पिण्ड पर चढ़ा दें।

टिप्पणी – मलमास होने पर (१) १६ के स्थान पर १७ पिण्ड देना चाहिए, क्रम निम्न प्रकार से होगा –(२) एकादश मासिक (१४) के बाद द्वादश मासिक (१६) फिर ऊनवार्षिक (१५) फिर ''त्रयोदश मासिक'' पिण्ड देना चाहिए।

✡ पिण्डा के नीचे वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उन सब को छू लें।

✡ पूर्व मुख हो, सव्य होकर –नाक-कान छू लें, हरि स्मरण करें।

✡ फिर दक्षिण मुख हो, अपसव्य होकर बायीं ओर से (पीछे मुख घुमाकर) श्वांस (सांस) को रोके।

✡ पितर का ध्यान करता हुआ मुख घुमा कर सामने पिण्डों की ओर रोकी हुई श्वास (सांस) छोड़ दें; मन्त्र पढ़ें –

।। अत्र पितर्मादयस्व यथा भाग मा वृषायस्व।
अमीमदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिष्ट।।

✡ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें –बाएँ हाथ से १६ दोनिया छू लें।

अद्य अस्मद् पितः गोत्र नाम [मातः गोत्रे-देवि] एषु श्राद्धेषु
पिण्डे अत्र प्रत्यवने निङ्ध्वं ते स्वधा।

✡ संकल्प कर हाथ का तिल-जल को १६ दोनिया जल सहित सामने रखी है उस पर छिड़क दें;

मासिक श्राद्ध में – अद्य अस्मद् पितः ... गोत्र .... नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत ..... अमुक मासिक श्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवने निक्ष्व ते स्वधा।

✡ क्रमशः १-१ दोनिया उठा कर उसका जल-तिल-फूल क्रमशः १-१ पिण्डा पर चढ़ा दें। दोनिया किनारे अलग फेंक दे।

✡ टेंट में (धोती में) जो कुशा-तिल लपेटा है, उसे निकाल कर नैऋत्य कोण में (अपने दाहिने हाथ दक्षिण की ओर कोने में) फेंक दे।

✡ सव्य होकर –नाक-कान छू लें –भगवान का ध्यान करें।

✡ फिर अपसव्य हो जाय।

✡ बाएँ हाथ में सूत लेकर दाहिने हाथ से पकड़ कर प्रत्येक पिण्डा पर अलग-अलग चढ़ा दें, निम्न मन्त्र पढ़ते रहें –

।। नमस्ते पिता रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय।
नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर् मन्यवे।
नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः देहि नमस्ते पितर् देष्म।
एतत्ते पितर् वासः।

✡ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें –

।। अद्य अस्मद् पितः अमुक गोत्र नाम [मातः गोत्रे देवि] एषु
श्राद्धपिण्डेषु एतानि वासांसि ते स्वधा।।

वार्षिक श्राद्ध पद्धति

✡ हाथ का तिल-जल पिण्डों पर छिड़क दें, मोटक भूमि पर रख दें।

✡ चुपचाप मौन होकर पिण्डों पर क्रमशः –

–चन्दन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दें।

✡ मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें –

।। अद्य अस्मद् पितः अमुक गोत्र नाम [मातः गोत्रे देवि] एषु श्राद्ध पिण्डेषु एतानि गन्धार्चन पुष्प धूप दीप ताम्बूल पूगीफलानि ते स्वधा।।

✡ संकल्प पढ़ कर हाथ का तिल-जल पिण्डों पर चढ़ा दें –मोटक भूमि पर रख दें।

✡ बची हुयी खीर थोड़ी-थोड़ी सभी पिण्डों के पास वेदी पर रख दें।

✡ दाहिने हाथ में जल ले-लेकर सभी पिण्डों के पास छोड़ दें। मन्त्र पढ़ें –

।। शिवा आपः सन्तु।।

मासिक श्राद्ध में – अद्य अस्मद् पितः .... गोत्र ..... नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अस्मिन् श्राद्धे एतानि वासंसि ते स्वधा।

मासिक श्राद्ध में – अद्य अस्मद् पितः गोत्र ..... नाम (मातः गोत्रे दिवे) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अस्मिन् श्राद्ध पिण्डे एतानि गन्धार्चन पुष्प-धूप-दीप ताम्बूल पूगीफलानि ते स्वधा।

वार्षिक श्राद्ध पद्धति

✡ फूल छोड़ दें –

।। सौमनस्य मस्तु।।

✡ चावल छोड़ दें –

।। अक्षतं चारिष्टं चास्तु।।

✡ मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़ें –

अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः [मातुः गोत्रायाः देव्याः] एषु श्राद्धेषु दत्तैतानि अन्न पानादिकानि ते स्वधा।

✡ हाथ का तिल-जल-पिण्डों पर छिड़क दें।

✡ सव्य होकर नाक –कान छू लें –पूर्व मुख करके हरि का स्मरण करें।

✡ दक्षिण दिशा की ओर मुख करके –दक्षिण दिशा को देखता हुआ –

✡ दाहिने हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर गिराता हुआ सभी पिण्डों पर जल धारा दें –मन्त्र पढ़ते रहें–

।। अघोरः पिताअस्तु।

मासिक श्राद्ध में – अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अस्मिन् श्राद्धे दत्तैतानि-अन्न पानादिकानि ते स्वधा।

✡ पूर्व की ओर मुख घुमा कर –हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें –

।। गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभि वर्धन्तां वेदाः सन्तति रेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।
अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन।
एताः सत्या आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः।।

✡ अपसव्य होकर –सभी पिण्डों पर से पान-सुपारी-फूल-सूत आदि पूजन-सामग्री हटा दें।

✡ सभी पिण्डों पर कुशा का ३-३ टुकड़ा रख दें।

✡ क्रमशः १-१ दोनिया में दूध मिला जल ले-लेकर दक्षिण की ओर धार गिराते हुए क्रमशः १-१ पिण्डा पर जल-दुग्ध धारा दे –देते समय निम्न मन्त्र पढ़ते रहें –

।। ऊर्जम् बहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्त्रु तम्।
स्वधास्थ तर्पयत मे पितरम्।।

✡ थोड़ा झुक कर सभी पिण्डों को सूँघ लें। पिण्डों की वेदी से उठा कर अलग रख दें।

अथवा –१-१ पिण्ड उठा-उठा कर सूँघ कर अलग किनारे रखते जाए।

✡ वेदी पर बिछे हुए सभी कुशों को उठा कर अग्नि में डाल दें।

।। वेदी पूजन।।

✡ सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें।

✡ १ कुशा लेकर उसके मूल से बीच की वेदी पर ६ तथा ४ अंक लिख दें। मन्त्र पढे –

।। शंखाय नमः। चक्राय नमः। गदाधराय नमः।

✡ अक्षत-फूल लेकर भगवान की प्रार्थना करें।

।। शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्व लोकैकनाथम्।।

✡ हाथ का अक्षत-फूल वेदी पर चढ़ा दें, और पूजन कर दें –मन्त्र पढ़ते रहें –

।। शंखाय नमः। चक्राय नमः। गदाधराय नमः। विष्णवे नमः।

✡ फिर अपसव्य होकर (जनेऊ-अंगौछा उल्टा पहन कर) –

✡ १६ अर्घ पात्र (दोनिया) जो आसन-मोटक के पीछे उलट कर रखा है। उन सभी को सीधा कर दें –उनमें तिल छिड़क दें।

✡ हाथ में जल-तिल-फूल लेकर दीपक बुझा दें।

✡ सव्य होकर –नाक-कान छू कर –(अथवा आचमन करके) पूर्व दिशा में मुख घुमा कर निम्न मन्त्र का ३ बार पाठ करें –

।। देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

●

टिप्पणी : कुछ लोग यहीं पर दक्षिणा संकल्प, गोग्रास संकल्प आदि प्रक्रिया करते हैं तत् पश्चात् श्राद्धस्थल को साफ कर गौरी गणपति की पूजा करके शय्यादान आदि करते हैं। कुछ लोग गौरी-गणेश की पूजा नहीं करते। यह सब देशाचार है। आपके यहां जैसा होता हो, करें-कराएँ। मैंने शास्त्रीय विधि लिखी है।

शय्यादान विधि

✡ शय्या का सिर पूर्व की ओर रखना चाहिए और चारों पावा के पास ईशान कोण में घी, अग्निकोण में रोली तथा पूजा सामग्री, नैऋत्य कोण में अन्न, तथा वायव्य कोण में जल पूर्ण घड़ा तथा शय्या के ऊपर फल-फूल-मिठाई-मेवा तथा वस्त्र-पात्र आदि जो कुछ देना हो रख दें।

✡ शय्या की पूजा करें –तीन बार जल छिड़के तथा गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़ें।

ओम् सोपकरण शय्यायै नमः, ओम् प्रमाण्ये देव्यै नमः।

✡ पहले ब्राह्मण का पाँव धोवें।।

।। नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च,
जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।

✡ ब्राह्मण के माथ में तिलक लगावें –

।। गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीम् सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम्।।

✡ हाथ में कुश-अक्षत-द्रव्य लेकर ब्राह्मण का वरण करें –

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मद् पितुः अमुक नाम्नः वार्षिक एकोद् दिष्ट श्राद्ध दिवसे शय्यादान कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं शर्माणम् शय्यादान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वां वृणे।

✡ इसके बाद शय्या के ऊपर एक पान पर सोने की प्रतिमा अथवा सुपारी रख कर विष्णु की पूजा करें।

✡ पहले फूल लेकर ध्यान करें –

ओम् इदं विष्णु र्विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् समूढ मस्य पा ँ सुरे स्वाहा।

।। मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं

यज्ञ ँ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ।

✡ फिर जल, चन्दन, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी, दक्षिणा-द्रव्य आदि चढ़ाकर सविधि पूजन करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ओम् शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।

विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।

वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकैकनाथम्।

✡ शय्या परिक्रमा करें –इसके बाद अक्षत-पुष्प-कुश-जल हाथ में लेकर शय्या तथा ब्राह्मण की परिक्रमा करें।

।। यानि कानि चा पापानि जन्मान्तर कृतानि च्च।

तानि-तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे।।

✡ परिक्रमा के बाद कुश अक्षत जल आदि जो हाथ में लिया हुआ है, उसे लिए हुए शय्या के पास पूर्वमुख खड़ा हों, बाएँ हाथ से शय्या स्पर्श कर लें और संकल्प पढ़ें –

।। अद्य विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्ने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय अद्य हर ओम् ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरत खण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्त्तैक देशे बौद्धावतारे पुण्य क्षेत्रे मासानां मासोत्तमे मासे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे च यथालग्नमुहूर्त योग करणान्वितायां श्रुति स्मृति

पुराणोक्त फलावाप्तये अमुक गोत्रः नामाऽहं अस्मद् पितुः अमुक नाम्नः (मातुः देव्याः) वार्षिक एकोदिदृष्ट श्राद्ध दिवसे समस्त पापक्षय पूर्वकाप्सरोगण सेवायुत विमानकरणक इन्द्र पुरगमनोत्तर षष्ठि सहस्त्रवर्षाधिरकरणक सर्वलोक महिमत्व तदुत्तर षष्ठि योजन मन्डल राज्य भोगान्तर शिव सायुज्यावाप्तिकामनया इमां शय्यां हंसतूली प्रच्छन्नां शुभ्र गण्डोपधानिकां प्रच्छादनपटास्तृतां धान्यादियुतां यथोपस्कर सहितां देवतां तथा च शीतोष्णवातलज्जा संरक्षणार्थम् वस्त्रोपवस्त्रम् सूपौदनपात्राणि एवं च फल पुष्प मिष्टान्नादीनि आसादित वस्तूनि सहिताम् यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ यह कहकर ब्राह्मण के हाथ में कुश अक्षत दे दें और ब्राह्मण को शय्या पकड़ा दें।

✡ ब्राह्मण लेकर कहे –।। स्वस्ति।।

✡ हाथ में कुश अक्षत जल-द्रव्य (शय्यादान सांगता) लेकर संकल्प पढ़ें –

।। अद्य कृतैतत् शय्यादान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इदं-दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ ब्राह्मण लेकर कहे –।। स्वस्ति।।

✡ फिर यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

।। यथा न कृष्ण शयनं शून्यं सागर जातया।
तथा शय्या पित्र्यप्यस्तु अशून्या जन्म जन्मनि।

✡ शय्यादान के अभाव में धोती-कपड़ा आदि जो ब्राह्मण को देना है, उसका संकल्प –

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः (मातुः) वार्षिक एकोदिदृष्ट श्राद्ध दिवसे यमराज-धर्मराज वैतरणी संकट निवारण पूर्वक स्वर्गे सुख संवास कामनया इमानि वस्त्रोपवस्त्रादीनि आसादित् वस्तूनि च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ सांगता संकल्प –

।। अद्य कृतैतत् दान प्रतिष्ठा सांगता सिध्यर्थम् इदं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ ब्राह्मण लेकर कहे –।। स्वस्ति।।

पददान

✡ पहले १२ पदों पर तीन बार जल छिड़के तथा गन्ध अक्षत पुष्प छोड़ें –

।। पदेभ्योनमः। देय द्रव्येभ्यो नमः।

✡ फिर हाथ में कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करें –

।। अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः (मातुः) अमुक नाम्नः वार्षिक श्राद्ध दिवसे यमराज धर्मराज वैतरणी संकट निवारणार्थम् श्रुत्यादि तथोक्त फल प्राप्त्यर्थम् च इमानि पदानि यथानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकाले दातुमहम् उत्सृजे।

✡ यह कहकर जल अक्षत पद पर छोड़ दें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

।। ओम् त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूत दयानिधे।
पद दानेन सन्तुष्ट प्रयच्छ मम वाञ्छितम्।

✡ गोदान संकल्प करें –कुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर संकल्प पढ़ें –

।। अद्य अस्मत् पितुः गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) अक्षय स्वर्गादि उत्तम-लोक प्राप्ति कामश्च इदं गो निष्क्रयी भूतं द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ गोदान सांगता संकल्प –

।। अद्य कृतैतत् गोदान प्रतिष्ठा सांगता सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

✡ ब्राह्मण गोदान लेकर कहे –।। स्वस्ति।।

✡ यजमान हाथ जोड़ कर गौ की प्रार्थना करें –

।। नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।
नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः।।

✡ ब्राह्मणों को खिलाने के लिए बनी सामग्री एक व्यक्ति के भोजन योग्य अपने सामने रखे और कुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर पिता के निमित्त दान करें –

।। अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत्

पितुः अमुक नाम्नः (मातुः देव्या) वार्षिक श्राद्ध दिवसे क्षुधा तृष्णा निवारणार्थम् स्वर्गे सुख प्राप्त्यर्थम् च इमानि भोज्य वस्तूनि सजलानि सदक्षिणानि गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।।

✡ गौ, कुत्ता, कौआ के लिए कुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर गौग्रास संकल्पकरें –

।। अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः (मातुः देव्या) वार्षिक श्राद्ध दिवसे गौ श्वान काकेभ्यो इदं ग्रासं दातुम् उत्सृजे।

✡ पहले हाथ जोड़कर गौ की प्रार्थना करें –

।। सौरभेय्याः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः।
प्रति गृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः।।

✡ फिर माला की तरह जनेऊ अंगौछा करके कुत्ता को हाथ जोड़े –

।। श्वानौ दौ श्याम वत्सलौ वैवस्वत कुलोद्भवौ।
ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्याता मेताव हिंसकौ।।

✡ फिर अपसव्य होकर कौआ को हाथ जोड़े –

काकोऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महाबल।
भवानेतच्च गृह्वातु भूमा वन्नं मयार्पितम्।।

✡ फिर सव्य होकर तीन बार जल छोड़े –

✡ कुश-अक्षत-जल लेकर ब्राह्मण भोजन-संकल्प करें – १

।। अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः [मातुः गोत्रायाः देव्याः] अक्षय स्वर्गादि-उत्तम लोकफल प्राप्तिकामश्च-अस्मिन् श्राद्ध दिवसे यथा संख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। भुक्तेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां ताम्बूलं च दास्ये।

✡ मोटक-तिल-जल लेकर आचार्य दक्षिणा संकल्प करें – २

।। अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्या) कृतैतेषां

टिप्पणी – १- यदि एक ही ब्राह्मण को भोजन करावे तो [यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् के स्थान पर –ब्राह्मणं भोजयिष्ये [भुक्तेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो के स्थान पर –भुक्ताय ब्राह्मणाय –कहे।

२- मासिक श्राद्ध में –अद्य अस्मद् पितुः ... गोत्रस्य ... नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत मासिक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थ मिदं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

श्राद्धानां प्रतिष्ठार्थम्-इमानि दक्षिणा द्रव्याणि यथानाम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

✡ भगवान की प्रार्थना करें –

।। प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। विष्णवे नमः।।

✡ पैंती उतार दे और आसन के नीचे जल छोड़कर उस जल को माथ लगावे और उठकर गौ-कुत्ता-कौआ को गोग्रास खिलावे।

✡ पान सुपारी-दक्षिणा ब्राह्मण उठा ले, कुशा छोड़ कर –शेष प्रयुक्त सामग्री –जैसे –

✡ वेदी की मिट्टी-दोनिया-पत्तल-पिण्ड-घी-तिल-जव-फूल आदि जो पिण्डा पर चढ़ा था। उपयोग में आ चुका है –सब बटोर कर नदी-तालाब में अथवा बाग-बगीचे में एक किनारे फेंक दे।

✡ कुशा को बटोर कर एक किनारे कहीं अलग फेंक दे। श्राद्ध स्थान को लीप कर स्वच्छ-शुद्ध कर दें।

✡ इसके बाद ब्राह्मण को पाँव धोवे और भोजन करावें।

✡ ब्राह्मण भोजन के बाद आँगन में पूर्व की ओर मुख करके यजमान खड़ा होकर ब्राह्मणों को चन्दन या दही का तिलक लगावे, पान-दक्षिणा-पद देवें –

✡ इसके बाद पुरोहित यजमान तथा परिवार के व्यक्तियों के माथे में तिलक लगावें –

।। आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।

Home

✡ मन्त्राक्षत –सभी ब्राह्मण यजमान को मन्त्राक्षत देवें –

।। मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाःसन्तु मनोरथाः।

शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव।।

✡ फिर यजमान ब्राह्मणों की परिक्रमा करें –

।। यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।

तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे।।

✡ प्रदक्षिणा के बाद ब्राह्मणों को पाँव छूकर उन्हें विदा करें।

।। इति वार्षिक श्राद्ध विधि।।

Home